उपसंहार

उपसंहार

प्रथम अध्याय - समकालीन महिला उपन्यासकार और डॉ॰राज बुद्धिराजा

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् जो निष्कर्ष सामने प्रस्तुत होते हैं, वे सार रूप में निम्नलिखित हैं -

डॉ॰ राज बुद्धिराजा का जन्म लाहौर के अनारकली बाजार में 16 मार्च 1937 ई॰ में साधारण जमींदार परिवार-अग्निहोत्री परिवार में हुआ। उनकी माता शांतिदेवी तथा पिता गणेशदास के संस्कारों में राज जी का बचपन व्यतीत हुआ। बड़ी कठिनाई के साथ पीएच॰ डी॰ तक कि कि शिक्षा प्राप्त की। 16 साल की उम्र में शिवप्रताप बुद्धिराजा के साथ विवाह बद्ध हुई। उन्होंने अध्यापिका का जीवन व्यतीत करते हुए देश-विदेश के छात्रों को हिंदी तथा भारत-जापान की संस्कृति का अध्ययन करवाया।

डॉ॰ बुद्धिराजा बहुमुखी तथा बहुआयामी व्यक्तित्व संपन्न साहित्यकार हैं। विनयशीलता, आत्मीयता, प्रसन्नचित्त और उत्साही, अथिति-प्रियता, कर्तव्यनिष्टता, प्रकृति-प्रिय, स्नेहिल और ममतामयी सखी, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, सादगी, संघर्षशील, कर्म ण्यशील / कर्मठ तथा विद्यार्थीप्रिय अध्यापिका, बहुभाषिज्ञ, संगीत तथा नाटक प्रेमी, प्रतिभा संपन्न साहित्यकार, सांस्कृतिक एकता की हिमायती आदि डॉ. राज बुद्धिराजा के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू उजागर होते हैं।

डॉ॰राज बुद्धिराजा ने उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य संग्रह, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावर्णन, आदि विधाओं में अपनी लेखनीद्वारा कृतित्व की छाप रखी हैं।

डॉ॰ राज बुद्धिराजा को विविध मान-सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जो उनके साहित्यिक तथा भारत-जापान सांस्कृतिक एकता के कार्य को अर्पित हैं। राज जी को मिला जापानी सर्वोच्च नागरीक सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ द सेक्रेड ट्रइयर गोल्ड़ रेज विद नैक रिबन' एक अनन्य साधारण उपलब्धि है। भारतीय साहित्य जगत् में विदेशी सर्वोच्च नागरीक सम्मान शायद ही किसी को मिला था, न मिला है, न मिलना संभव प्रतीत होता है।

डॉ॰ राज बुद्धिराजा ने 'प्रश्नातीत', 'कावेरी', 'कन्यादान', 'हर साल की तरह', रेत का टीला' इन नायिका प्रधान उपन्यास रचनामृतों का सृजन किया, साथ ही 'शंखनाद' इस स्वामी दयानंद सरस्वती जी के जीवन चरित्र प्रधान धार्मिक उपन्यास का प्रणयन किया।

मन्नू भंडारी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, कुसुम अंसल, कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, दिनेशनंदिनी डालमियाँ, दीप्ति खंड़ेलवाल, निरूपमा सेवती, चंद्रकांता, क्रांति त्रिवेदी, मालती परूलकर, मृणाल पांड़े प्रभा सक्सेना, मालती जोशी, नमिता सिंह, राजी सेठ, अनामिका, चित्रा मुद्गल, ऋता शुक्ल, गीतांजलि श्री, बिंदु सिन्हा आदि डॉ. राज बुद्धिराजा की समकालीन महिला उपन्यासकार हैं।

डॉ॰ राज बुद्धिराजा के समकालीन महिला उपन्यासकारों ने हिंदी उपन्यास साहित्य जगत् की बड़ी ही रिक्ताओं की पूर्ति की हैं। समकालीन महिला उपन्यासकारों की बहुत-सी विशेषताएँ राजी में दृष्टिगत होती हैं। इन विशषताओं के अतिरिक्त उनके साहित्य में भारत-जापान सांस्कृतिक एकता का प्रयास, भाषा-शैली गत विविधता आदि दिखाई देते हैं। इसी कारणवश समकालीन महिला उपन्यासकारों में डॉ॰ राज बुद्धिराजा का स्थान स्वर्ण के मध्य बिठाए गए हिरे की भाँति है, जो समुचे परिवेश को सम्मोहित करता है।

अंतत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि डॉ॰ राज बुद्धिराजा का संघर्ष शील जीवन उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं को तराशता गया, जिससे निसृत साहित्य ने उनके समकालीन महिला उपन्यासकारों में उनको एक शीर्षस्थ पद की अधिकारीनी बनाया है।

द्वितीय अध्याय - समस्या : संकल्पना एवं स्वरूप विवेचन

इस अध्याय के अध्ययन से निम्न तथ्य सम्मुख आते हैं - 'समस्या' का अर्थ 'किसी छंद या वर्ण को एकत्र रखना' था, किंतु 'समस्या' शब्द का अर्थ-विस्तार होकर वर्तमान में इसका अर्थ 'कठिन अवसर प्रश्न अथवा प्रसंग' है। 'समस्या' को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने द्वंद्वात्मक अथवा संघर्षात्मक स्थिति से गुजरनेवाली प्रक्रिया को समस्या कहा है। इनकी संख्या अनगिनत है तथा अनंत क्षेत्रों में व्याप्त होने के कारण समस्या का स्वरूप एवं

व्याप्ति असीम, अनंत विस्तृत हैं।

प्रमुख आधार स्तंभो-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक के आधार पर समस्या के पाँच प्रकार होते हैं - सामाजिक समस्या, सांस्कृतिक समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या। समाज तथा सामाजिक आचारशास्त्र के प्रतिकूल स्थिति सामाजिक समस्या है। संस्कृति से संबंधित समस्याओं को सांस्कृति समस्या के अंतर्गत रखा जाता है। राजनीतिक क्षेत्र से उद्‌भूत समस्या को राजनीतिक समस्या कहा जाता है। अर्थ से संबंधित समस्याओं को आर्थिक समस्या कहा जाता है, तो धर्म से संबंधित समस्याओं को धार्मिक समस्या कहा जाता है। इन पाँचों समस्याओं के अनेक उपभेद होते हैं।

आध्यात्मिक-भौतिक के आधार पर समस्या के दो भेद होते हैं - आध्यात्मिक समस्या, भौतिक समस्या, जिन के अनेक उप भेद विद्‌यमान हैं। आत्मा, ब्रह्म, जीव का पारस्पारिक संबंध एवं स्वरूप संबंधी चिंतन, विचार की समस्या को आध्यात्मिक समस्या कहा जाता है। पंचभूतों-अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी, जल से संबंधित अथवा निर्मित समस्या भौतिक समस्या कहलाती है। आध्यात्मिक समस्या प्राय: आंतरिक होती है, तो भौतिक समस्या बाह्‌यजगत् से संबंधित होती है। उनका आपसी पारस्पारिक संबंध होता हैं।

उद्‌भव के आधार पर समस्या के प्रमुख दो भेद हैं - प्रकृतोद्‌भावित समस्या तथा समाजोद्‌भावित समस्या। प्रकृति से उद्‌भूत समस्या को प्रकृतोद्‌भावित अथवा नैसर्गिक अथवा प्राकृतिक समस्या कहा जाता है। समाजद्‌वारा उद्‌भूत समस्या को समाजोद्‌भावित अथवा मानवनिर्मित अथवा मानवीय समस्या कहा जाता है। दोनों समस्याओं का परिणाम मानव को ही भूगतना पड़ता हैं।

अंतरंग-बहिरंग के आधार पर समस्या के दो भेद है - आंतरिक समस्या एवं बाह्‌य समस्या, जिनके अनेक उपभेद होते हैं। मनुष्य के अंतर्जगत् से संबंधित समस्या को आंतरिक समस्या अथवा अंतरंग समस्या अथवा वैयक्तिक समस्या कहा जाता है। मनुष्य के बाह्‌य जगत् से संबंधित समस्या को बहिरंग समस्या अथवा बाह्‌य समस्या कहा जाता है। आंतरिक समस्या व्यक्ति-सापेक्ष होती है, तो बाह्‌य समस्या समाज- सापेक्ष होती है। अंतरंग

और बहिरंग का परस्पर प्रभाव होता है, उसीकारण अंतरंग समस्या और बहिरंग समस्या का पारस्पारिक प्रभाव दृष्टिगत होता हैं।

क्षेत्र-नामकरण के आधार पर समस्या के जितने क्षेत्र है, इतने प्रकार किये जा सकते हैं। जिस क्षेत्र में जो समस्या निर्माण होती है, उसी क्षेत्र के नामकरण के आधार पर उस समस्या का नामकरण किया जा सकता है। अनंत क्षेत्र होने के कारण क्षेत्र नामकरण के आधार पर अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं।

समस्या और साहित्य का पारस्पारिक अंत:संबथ निकट का है। इसी कारण हिंदी साहित्य में समस्या-प्रधान साहित्य की लंबी परंपरा है।

मानवीय चरित्रों का निर्माण, समाज परिवर्तन का प्रयास. समस्या का शुष्क ताविहीन सरस अंकन, जन जागृति आदि कारणों से समस्या-प्रधान साहित्य का महत्व एवं उपादेयता बनी रही हैं। अत: निसंदेह समस्या दवंद्वात्मक स्थिति से गुजरनेवाली वह प्रक्रिया है, जिसके विभिन्न आधारों पर आधृत अनेक प्रकार होते हैं, जिसका साहित्य से अभिन्न संबंध होने के साथ-साथ ही समस्या प्रधान साहित्य की सामाजिक उपादेयता भी चिरंतन होती है।

तृतीय अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् निम्नांकित तथ्य सामने आते हैं -

'परिवार' का कोशगत अर्थ एवं पारिभाषिक अर्थ देखने पर परिवार की संकल्पना स्पष्ट हो जाती है कि - स्वजनों, आत्मीयजनों, सगे-संबंधियों आदि के जनसमुदाय को परिवार कहा जाता है, जो एक-दूसरे से रक्त-संबंधों से जुड़े होते है। परिवार के विविध प्रकार अस्तित्व में है। जैसे-मातृसत्तात्मक परिवार, पितृसत्तात्मक परिवार आदि। परिवार के विविध भेद विविध आधारों से बनते है। इन परिवारों का अपना विशिष्ट महत्व होता है।

'कावेरी' उपन्यास में विविध पारिवारिक समस्याएँ चित्रित हैं। उन्हीं मे से एक है पारिवारिक विघटन की समस्या, जिसक कारण पारिवारिक सदस्य टूट कर विखरते है। परिवार के विघटन के कारण ही अनु, शांतनु, कावेरी, टूटकर विखर चुके हैं। दूसरी समस्या है-घरेलू कामकाज की। इसके कारण सुधि अपने सहेलियों से मिलना तो दिर उनको खत

लिखने के लिए भी समय नहीं निकाल पाती। घर-बाहर के कामकाज को करते-करते सुधि के उंगुलियों की पोर-पोर वेदना से कसक उठती है। कामचोर पति की समस्या के कारण सुधि को अपने घर का सब काम करने के साथ-साथ नौकरी कर के परिवार को चलाना पड़ता है। रवि सुधि से जोर-जबर्दस्ती से काम करवाता है।

कावेरी, सुधि, उर्मि अपने पति से प्रेम की आकांक्षा करती हैं। किंतु उन्हें वह अप्राप्य है। वे सब दांपत्य-प्रेम के अभाव की समस्या से पीड़ित हैं। कावेरी को पति द्वारा त्याग दिया जाने के कारण दांपत्य-प्रेम से वह वंचित है। कावेरी को खुद के बच्चे के नामकरण का अधिकार नहीं दिया जाता, जिसके कारण उसे समस्या का सामना करना पड़ता है। साथही उसे अपने ससुरालवालों के रोष का कारण बनना पड़ता है। सभ्य समाज में शिष्टाचार की औपचारिकता को किस तरह निभाया जाता है, इसका चित्रण लेखिका ने किया है। जो लोग शिष्टाचार नहीं निभा पाते उन्हें समाज अशिष्ट, असभ्य मानता है।

पति-पत्नी में होते झगड़े के कारण उनका जीवन विषाक्त बन जाता है। यह झगड़ा कभी-कभी विवाह-विच्छेद का रूप लेता है। इसी कारण पति-पत्नी के झगड़े परिवार के लिए समस्या बना जाते है। शरारती बच्चों के कारण परिवार के लिए विविध कष्ट उठाने पड़ते है। अत: शरारती बच्चे परिवार के लिए समस्या बन जाते है। आदमी जैसे-तैसे मकान बना लेता है, जो चार दीवारों से बनता है। किंतु घर बनाने के लिए आदमी की उम्र जाती है। इस समस्या को लेखिका ने अपने सिद्धहस्त कलम से उपन्यास में अंकित किया है।

अगर परिवार की जिम्मेदारी पत्नी उठाती है, तो बच्चों की शिक्षा की समस्या कठिन होती है। गैर जिम्मेदार पति, की वजह से परिवार सुधि चलाती है, जिसे बच्चों के लिए कारपोरेशन की शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षा देना संभव नहीं। तब बच्चों की शिक्षा समस्या वनकर सुधि के सामने उपस्थित होती है। परिवार के प्रति समर्पित पत्नी को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वह उसके लिए कठीनाई बन जाती है। दांपत्य के आप-सी झगड़े के कारण टूटते दांपत्य-जीवन की समस्या को लेखिका डॉ॰राज बुद्धिराजा ने पूरी क्षमता के साथ प्रस्तुत किया है।

BARR. BALASAHEB KH. DEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

परिवारिक जिम्मेदारी का बोझ उठाते-उठाते सुधि, कावेरी थक चुकी है। उनके लिए पारिवारिक जिम्मेदारी समस्या वन चुकी है, फिर भी वे उसे ढोती है। पिता के प्रेम से बंचित बच्चों के बिगड़ने की समस्या को लेखिका ने बखूबी से चित्रित किया है। समकालीन परिवेश में माता-पुत्री संबंधों एवं माता-पुत्र संबंधों में आ रही दूरियों को रेखांकित करने में लेखिका ने कोई कसर नहीं छोड़ी हैं।

परिवार में पत्नी एवं लड़की का स्थान हेय माना जाता है। इसी तथ्य को लेखिका ने स्वानुभूति के आधार पर अपनी कलम से कागज पर उतारा है। बच्चों पर अत्यधिक नियंत्रण रखनेवाली माताओं के कारण बच्चों को असमय ही बुर्जुग व्यक्ति-सा व्यवहार करना पड़ता है। उनको अत्यधिक नियंत्रण में रखने के कारण व्यक्तित्व विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है। उनका बचपन अधूरा ही रहता है। इसलिए लेखिका ने बच्चों की इस समस्या को प्रस्तुत किया है।

अंततः कहा जा सकता है कि लेखिका डॉ॰ राज बुद्धिराजा ने स्वानुभूति से युक्त पारिवारिक समस्याओं को 'कावेरी' उपन्यास में बिना ऊहापोह के स्वाभाविक रीति से प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

इस अध्याय के अध्ययनोपरांत जो तथ्य सामने आये हैं, वे इस प्रकार हैं-

नारी के कोशगत अर्थ के अनुसार वह स्त्री नारी कहलाती है, जो मनुष्य प्राणी को जन्म देती है एवं उसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा आदि गुण हो। विभिन्न विद्वानों की परिभाषा से ज्ञात होता है कि नारी मनुष्य सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका, गार्हस्थ, स्नेहसुखदात्री हैं। समाज में नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। इन सभी रूपों में माता, वहन, पत्नी, प्रेमिका, सौत, सास, वहू, वेटी आदि रूप प्रमुख हैं। अतः नारी विविध रूपों में समाज कार्यान्वित रहता है।

प्रागैतिहासिक युग नारी का गौरवशाली युग या सुवर्ण युग कहा जा सकता है। इसकाल में नारी श्रद्धा, सम्मान, उच्च स्थान, सत्ता आदि की अधिकारणी थी। वैदिक

काल में नारी का मानवी रूप स्वीकृत करते हुए उसे पुरूष के समकक्ष स्व-व्यक्तित्व विकास के अवसर थे। उत्तर वैदिक काल में नारी स्वत्व एवं अधिकार से वंचित होकर अपदस्थ हुई। इसीलिए उत्तरवैदिक काल को नारी समस्याओं का उद्‌गाता युग कहा जाता है। विविध नारी समस्याओं का समाज में पनपने का अवसर सूत्र ग्रंथ तथा महाकाव्य युग में मिला। स्मृति युग में नारी अधिकार वंचित होकर पुरूष के आश्रय में पलने लगी। पूर्व मध्ययुग में नारी का पतिव्रता रूप स्तुत्य रहा। किंतु कबीरादि कवियों ने नारी की निंदा की। उत्तर मध्य युग में नारी केवल भोग और विलास की वस्तु बनकर रह गयी।आधुनिक युग में समाजसुधारकों ने नारी मुक्ति के लिए सफल प्रयास किए।परिणामस्वरूप नारी रूढ़ि, परंपरा, प्रथा से मुक्त हुई ।उत्तर आधुनिक काल में नारी बंधनों से मुक्त होने के बावजूद नौकरी, कामकाज आदि समस्याओं से मुक्त नहीं है।

नारी की मुक्ति के लिए विभिन्न देशों में आंदोलन चले। इसके परिणाम में नारीवाद की संकल्पना सामने आयी। सिमेना द बुआ जैसे साहित्यकारों ने नारीवाद को साहित्य-कृतियों में प्रश्रय प्रदान किया।

'कावेरी' उपन्यास में विविध समस्याओं का अंकन डॉ॰राज बुद्‌धिराजा ने किया। परित्यक्ता नारी को समाज में किस तरह संकटों का सामना करते हुए जीवन व्यतीत करना पड़ता है, इसका जीवंत चित्रण लेखिका ने किया है। समकालीन नारी के अकेलेपन की समस्या को लेखिका ने चित्रित करते हुए उसके प्रेम-विवाह एवं पुर्नविवाह की समस्या को सफला से उठाया है। यथार्थ की पृष्ठभूमी पर लेखिका ने कामकाजी नारी की समस्या को अभिव्यंजना प्रदान की है। भारतीय नारी की परनिर्भरता की समस्या लेखिका स्वानुभूति के आधार पर प्रस्तुत करती है। कावेरी के द्‌वारा लेखिका ने समकालीन कामकाजी नारी की बदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या को प्रखर वाणी दी है। अज्ञान और अशिक्षा से पीड़ित नारी की समस्या का उद्‌घाटन लेखिका उक्त उपन्यास में करती है। नारी को अर्थार्जन का साधन माननेवाले समाज की दृष्टि को प्रस्तुत करने में लेखिका बिना ऊहापोह किए प्रस्तुत करती है। यौन-संबंधों की समस्या, घुटन एवं छटपटाहट की समस्या इन प्राचीन काल से चली

आ रही नारी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। समाज के अवमान और बदनामी से संत्रस्त हो विद्रोही एवं दबंग बनती नारी की समस्या समाज को विचार करने के लिए मजबूर करती।

अंत में कहना आवश्यक नहीं जान पड़ता कि उपन्यासकार डॉ॰राज बुद्धिराजा ने बिना ऊहापोह किए यथार्थ-पृष्ठभूमि पर आधृत आम नारी की विविध समस्याओं को सफलता के साथ बखूबी से 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित किया है, इसमें कोई संदेह नहीं।

पंचम अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित अन्य समस्याएँ

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् निम्नांकित निष्कर्ष सार रूप में सामने आते हैं -

डॉ॰राज बुद्धिराजा ने 'कावेरी' उपन्यास में पारिवारिक समस्याओं एवं नारी-जीवन की समस्याओं के अतिरिक्त गौण समस्याओं को भी स्थान प्रदान किया हैं। इन गौण समस्याओं में मूल्यहीनता की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, दहेज-प्रथा की समस्या आदि समस्याओं का समावेश हैं। लेखिका ने प्रमुख समस्याओं को जितनी सशक्तता के साथ प्रस्तुत किया है, उसी सशक्तता के साथ गौण समस्याओं को चित्रित किया है। यह समस्याएँ लेखिका के जीवन-संघर्ष की कलात्मकता से ओतप्रोत प्रस्तुती है।लेखिका ने आप-बीती की अभिव्यंजना करते हुए स्वानुभूतिपरक समस्याओं को अंकित किया है, जिसके कारण वे समस्याएँ सच्चाई के अत्यधिक निकट है।जीवन की समस्याओं के रेखांकन में लेखिका सफल हुई हैं।

अंतत: डॉ॰ राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में मानव-जीवन की यथार्थ परक समस्याओं का विना ऊहापोह के अंकन हुआ है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ :

1. डॉ॰ राज बुद्धिराजा बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व संपन्न साठोत्तरी महिला साहित्यकार है।
2. डॉ॰ राज बुद्धिराजा ने छ: लघु-उपन्यासों का सृजन किया हैं।
3. डॉ॰ राज बुद्धिराजा कोश-निर्माण में योगदान देनेवाली भारत की एकमेवद्वितीय

महिला हैं।

4. डॉ० राज बुद्धिराजा ने 'कावेरी' में बिना ऊहापोह किये पारिवारिक समस्याओं को वाणी प्रदान की है।

5. डॉ० राज बुद्धिराजा ने आधुनिक परिवेश में परिवर्तित स्त्री-पुरूष संबंधों का चित्रण किया है।

6. नारी-जीवन की समस्याओं के चित्रण में डॉ०राज बुद्धिराजा की स्वानुभूति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

7. डॉ० राज बुद्धिराजा सफल समस्याप्रधान उपन्यासकार हैं।

8. साठोत्तरी हिंदी महिला उपन्यासकारों में डॉ०राज बुद्धिराजा का स्थान अक्षुण्य है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

उक्त शोध-विषय के अध्ययन के समय विविध आयाम सन्मुख उपस्थित हुई, जिन पर अनुसंधान किया जा सकता है। अनुसंधान-कर्ता भविष्य में निम्नांकित विषय पर अनुसंधान कर सकते हैं -

1. डॉ०राज बुद्धिराजा के उपन्यासों में सामाजिक चेतना।
2. डॉ०राज बुद्धिराजा के साहित्य में चित्रित नारी।
3. डॉ०राज बुद्धिराजा के उपन्यासों में चित्रित नारी।
4. डॉ०राज बुद्धिराजा के साहित्य में चित्रित पारिवारिक जीवन
5. डॉ०राज बुद्धिराजा के समग्र साहित्य का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
6. डॉ०राज बुद्धिराजा के उपन्यासों का कथ्य एवं शिल्प।